22. वस्त्रों का चुनाव

Selection of Clothes

वर्तमान समय में हमारे लिये एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, उचित वस्त्रों का चुनाव। वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में और वस्त्र विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नये तन्तुओं का आविष्कार हो रहा है, जिसके कारण बाजार में अनेकों-अनेक प्रकार के तन्तुओं से बने वस्त्र उपलब्ध है। इनके साथ ही व्यक्तिगत आवश्यकता, फैशन, खरीदने की क्षमता, कम्प्यूटरीकृत डिजाइन और सामाजिक स्तर के साथ वस्त्रों के प्रति जागरूकता ने बाजार में वस्त्रों के प्रकार व डिजाइन में क्रान्ति ला दी है। ऐसे में वस्त्र चयन अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण परीक्षा बन जाता है, जिसमें अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना होता है। वस्त्रों का चयन करते समय स्वयं, परिवार के सदस्यों तथा घरेलू उपयोगके ि लयेि वशेषध् यानर खाज ाताह ै ाव स्त्रच यनप्र क्रियाक ो व्यक्तित्व,उ म्र,ज लवायु,अ वसर,अ ाय,प्र योजन,घ ारके स दस्योंक ी संख्या, व्यवसाय, कार्य क्षेत्र, रुचि, फैशन आदि कारक प्रभावित भी करते हैं और इनको ध्यान में रख कर सही वस्त्र चुनाव किया जा सकता है।

वस्त्रों के चयन में प्रभावित करने वाले कारक या वस्त्र चयन में ध्यान रखने योग्य बिन्दु :

1. **व्यक्तित्व :** हमारे व्यक्तित्व को वस्त्र प्रभावित करते हैं। हम पूर्व में पढ़ चुके हैं कि वस्त्र व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब होते हैं। अत: वस्त्र चयन करते समय व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ध्यान रखना चाहिये जैसे-त्वचा का रंग, कद, शारीरिक आकार एवं गठन और स्वभाव। वस्त्र व्यक्ति के शारीरिक आकार, कद व गठन को छिपाने एवं प्रभावशाली ढंग से उभारने का भी काम करता है। एक लम्बे कद के व्यक्ति के लिये ऐसे वस्त्रों का चयन करेंगे जिसमें खड़ी रेखाएं न हो बल्कि समतल रेखाएं हों क्योंकि खड़ी रेखाएं उसे और लम्बा कद का प्रतीत करवायेंगी जबकि समतल रेखाएं उसे सामान्य कद का दिखायेंगी, ठीक इसी प्रकार एक मोटी महिला के लिये बड़े प्रिन्ट वाले वस्त्र चयन करते हैं तो महिला का शारीरिक आकार और ज्यादा मोटा लगेगा अत: मोटापा छुपाने या कम दर्शाने के लिये छोटे व बारीक प्रिन्ट वाले वस्त्र उपयुक्त होंगे।

   व्यक्ति के स्वभाव चरित्र एवं भावनाओं का ध्यान रख कर भी वस्त्रों का चयन किया जाना चाहिये जैसे- धीर-गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति को सादे व कम चमकीले-भड़कीले वस्त्र पसंद आते हैं, जबकि चुलबुले स्वभाव वाले व्यक्ति को गहरा रंग और चमकदार व भड़कीले वस्त्र पसंद आते हैं।

   व्यक्ति की त्वचा का रंग भी वस्त्र चयन को प्रभावित करता है। गोरे रंग की त्वचा पर सभी प्रकार के रंगों के वस्त्र अच्छे लगते हैं, परन्तु जब त्वचा का रंग गहरा हो तो रंगों, प्रिन्ट और वस्त्रों का सावधानीपूर्वक चयन किया जाना चाहिये। वस्त्र व्यक्तित्व को उभारता है। अत: बेहद सावधानी के साथ वस्त्रों का चयन करना चाहिये।

2. **उम्र/आयु :-**व यक्तिक ोअ ायुके अ नुसारह ीव स्त्रध ारणक रने चाहिये। हर तरह का वस्त्र हर उम्र में व्यक्ति को धारण नहीं करना चाहिये। उम्र के आधार पर धीरे-धीरे व्यक्ति की पसन्द और नजरिया वस्त्रों के प्रति बदलता रहता है। ये उपयुक्त भी है। इसलिये शिशुओं के लिये सूती, हलके एवं मुलायम व बारीक प्रिन्ट के वस्त्र उनकी कोमल त्वचा के अनुरूप होते हैं। बच्चों पर गहरे व चटकीले रंग के वस्त्र अधिक फबते हैं। किशोर एवं युवाओं पर प्रचलित फैशन के अनुसार रंग व स्टाइल के वस्त्र आकर्षक लगते हैं तथा वयस्क एवं वृद्धों पर हलके रंग, सौम्य डिजाइन और आरामदायक वस्त्र उपयुक्त लगते हैं।

3. **व्यवसाय :** प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान भी वस्त्रों से हो जाती है, उसी तरह से व्यक्ति के व्यवसाय और उसके कार्यक्षेत्र को भी उसको पोशाक से जाना जाता है। जैसे-डॉ. का सफेद कोट, वकील-काला कोट, सेना, पुलिस व यातायात पुलिस यूनीफॉर्म, एक मैनेजर, ऑफिसर की औपचारिक ड्रेस शर्ट, पैन्ट व टाई, वेटर की ड्रेस, अनेकों-अनेक व्यवसायों की अपनी ड्रेस होती हैं। और हम उनकी पोशाकों से पहचान जाते हैं कि अमुक व्यक्ति किस व्यवसाय से जुड़ा है और उसका कार्यक्षेत्र क्या है। कुछ विशिष्ट कार्यों के लिये विशिष्ट पोशाकें होती हैं, जैसे-आग अवरोधी पोशाक, अन्तरिक्ष में जाने वाले वैज्ञानिकों के 'अन्तरिक्ष सूट' और खेलकूद से सम्बन्धित पोशाकें जो

व्यक्ति की खेलों की रुचि के बारे में आसानी से बता देती हैं। अत: वस्त्र चयन करते समय व्यवसाय व कार्य-क्षेत्र का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये।

4. **जलवायु :** भारत एक ऐसा देश है जहां पर दस कोस की दूरी पर भाषा बदल जाती है, ठीक वैसे ही जलवायु भी बदल जाती है। एक जैसा मौसम लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रहता परन्तु स्थानविशेष की जलवायु वस्त्रों के चुनाव को प्रभावित करती है। ठण्डे इलाकों में (जहां हमेशा ठण्डा मौसम रहता है) ऊनी वस्त्रों का चयन करना उचित होता है बजाय कि अन्य प्रकार के वस्त्रों में समय और धन नष्ट किया जाये क्योंकि जलवायु के हिसाब से गर्म कपड़े ही ज्यादा इस्तेमाल होंगे। ठीक इसी प्रकार गर्मी वाले इलाकों में सूती व लिनन के वस्त्र एवं ऐसे वस्त्र जो पसीने को सोख लें, ऐसे वस्त्र ज्यादा उपयोगी सिद्ध होंगे। अत: स्थानविशेष की जलवायु के आधार पर वस्त्रों का चयन करना चाहिये। सर्दी, गर्मी व बरसात-ये तीन तरह के मौसम ज्यादा देखे जाते हैं। बरसाती इलाकों में ऐसे वस्त्रों का चयन हो जो जल्दी भीग कर जल्दी सूख जाते हैं व जिनकी देख-भाल आसान हो ऐसे स्थानों पर बरसाती व छातों की प्राथमिकता होती है।

5. **अवसर/प्रयोजन :** अवसर और स्थान के आधार पर वस्त्र चयन करने चाहिये। जब व्यक्ति अवसर/प्रयोजन व स्थान के अनुरूप वस्त्र का चुनाव नहीं करता है और वस्त्र नहीं पहनता है तो वह उपहास का कारण बन जाता है। अपनी दैनिक रोजमर्रा की क्रियाओं में और अपने शैक्षणिक स्थान व कार्य स्थल के लिये आरामदायक व सौम्य वस्त्रों का चयन किया जाना चाहिये जबकि किसी विशेष अवसर, जैसे-पार्टी, तीज-त्योहार व विवाह समारोह पर पहनने वाले वस्त्र विशेष डिजाइन एवं परिसज्जात्मक होने चाहिये। गहरे व चटक रंगों का चयन आपके सौन्दर्य और अवसर को सार्थक कर देते हैं।

   वस्त्रों में रंगों का चयन भी अवसर के अनुसार होना जरूरी है, जैसे-दु:ख या शोक एवं अस्पताल जाते समय हलके रंग और सफेद व सौम्य वस्त्रों तथा खुशी के अवसर पर चटकीले रंग, जैसे-लाल, केसरिया, हरा, नीला व गुलाबी और गोल्डन, महरुन आदि का चयन उपयुक्तम ाना ज ाता है ।अ त:अ वसरके अ नुसारव स्त्रोंक ाच यन आपके व्यक्तित्व को और अधिक निखार सकता है।

6. **फैशन :** आज के इस प्रगतिशील एवं परिवर्तनशील युग में इसके साथ न चले तो पिछड़ा हुआ माना जाता है और हम वहीं खड़े रह जाते हैं, समय जल्दी से बदल जाता है। जैसे-जैसे वस्त्र विज्ञान में क्रान्ति आई है वैसे-वैसे नित-नये फैशन का चलन तेजी से बढ़ और बदल रहा है। आज की युवा पीढ़ी प्रचलित डिजाइन व रंग के अनुसार वस्त्रों को पसन्द करती है। एक समय में जिस भी रंग और स्टाइल के परिधानों का चलन रहता है, उस समय में युवाओं की प्राथमिक पसन्द वही परिधान रहते हैं। फैशन समय-समय पर बदलते रहते हैं। अत: फैशन अपनाते समय ध्यान रखना चाहिये कि वस्त्र के डिजाइन, रंग व स्टाइल आपके व्यक्तित्व को निखारें, बिगाड़ें नहीं। फैशन के अनुसार वस्त्रों का उचित चयन व्यक्ति में आत्मविश्वास पैदा करता है। फैशन का प्रभाव किशोर-किशोरियों में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है।

7. **लिंग :** वस्त्रों का चुनाव करते समय लिंग भी प्रभावी कारक है। लिंग के अनुसार वस्त्र चयन किये जाते हैं। स्त्री और पुरुषों के लिए वस्त्र चयन करते समय उनके शारीरिक ढांचे, रुचि, उम्र आदि का ध्यान रखा जाता है। पुरुषों के लिये पैंट, जीन्स, शर्ट, कुरता-पायजामा, शेरवानी, कोट, जैकेट आदि एवं स्त्रियों व बालिकाओं के लिये साड़ी, सूट, पैरेलल, लहंगा, फ्रॉक इत्यादि।

   स्त्रियों और बालिकाओं के लिये गहरे और चटक रंगों के वस्त्र तथा पुरुष व बालकों के लिए हलके रंगों के वस्त्र चयन किये जाते हैं। वस्त्र की डिजाइन भी स्त्री-पुरुषों के अनुसार ही लेना चाहिये।

8. **आय :** पारिवारिकअ ार्थिकि स्थितिव स्त्रोंके च यनक ोप्र भावित करती है। वर्तमान स्थिति में देखें तो सामान्य तौर पर व्यक्तियों की खरीदारी की क्षमता बढ़ी ही है परन्तु हमें चाहिये कि जब हम वस्त्र खरीदने जायें तो अपनी आय और बजट का ध्यान रखें। बाजार में महंगे-से-महंगा वस्त्र उपलब्ध है और महंगे वस्त्र ज्यादा सुन्दर और आकर्षक होते हैं, लेकिन अगर आय को ध्यान में रख, बजट के अनुसार विवेक, बुद्धिमत्तापूर्ण और सूझ-बूझ से मूल्यों के उतार-चढ़ाव को ध्यान में रख कर वस्त्रों का चयन करके खरीदा जाये तो कम धन में भी अच्छे वस्त्र चुने और खरीदे जा सकते हैं।

वस्त्र खरीदने जाते समय अगर हम अपने पहले से खरीदे वस्त्रों को देख लें और ये सुनिश्चित कर लें कि वास्तव में किन और किस तरह के वस्त्रों की आवश्यकता है, ये अगर पहले से पता हो तो फिजूल खरीददारी और फिजूल खर्चे से बचा जा सकता है। वस्त्रों का चयन भी आसान और सुनियोजित हो जाता है।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं का अगर वस्त्र चयन करते समय ध्यान रखा जाये तो वस्त्र चयन करना आसान हो जाता है।

वस्त्रों की खरीद : वस्त्र चयन करने के उपरान्त खरीदते समय भी कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखना उतना ही अनिवार्य है जितना कि प्रभावित करने वाले कारक। खरीदते समय ये सुनिश्चित होना जरूरी है कि जितना पैसा खर्च करके हमने वस्त्र खरीदा है वो उतने मोल का लगभग हो और वस्त्र उचित मात्रा में प्राप्त हुआ हो। निम्नलिखित ऐसे बिन्दु हैं जिनका ध्यान रखा जाये तो वस्त्र की खरीदारी प्रभावशाली बन जाती है-

1. परिधान और पोशाक बनाने के लिये वस्त्र की मात्रा का निर्धारण पहले ही आवश्यक रूप से कर लेना चाहिये। वस्त्र को मीटर में नापा जाता है। किसी भी परिधान को बनाने के लिये कितना मीटर वस्त्र की आवश्यकता होगी ये पहले ही माप लेना चाहिये। जैसे-एक साधारण कुरते को सामान्य कद-काठी की लड़की के लिये बनाने के लिये

सामान्य तौर पर 2 से 2.25 मीटर कपड़ा चाहिये, परन्तु कोई डिजाइन बनवाई जाये तो 25-50 से.मी. कपड़ा अतिरिक्त लेना होगा। वस्त्र की लम्बाई के साथ चौड़ाई का भी ध्यान रखना चाहिये। वस्त्र की चौड़ाई परिधान की डिजाइन और सज्जा को प्रभावित करती है।

सूती वस्त्र 36'', रेशमी वस्त्र 39'', ऊनी वस्त्र 54''-60'' और मानवकृत रेशे से बने वस्त्रों का अर्ज 35''-72'' तक होता है। इस तरह से ज्यादा अर्ज वाले वस्त्र में डिजाइन और परिसज्जा आसानी से हो जाती है।

2. वस्त्र चयन और खरीदते समय हमारी आय हमें प्रभावित करती है इसलिये वस्त्र खरीदने से पहले वस्त्र की कीमत जानना अत्यन्त आवश्यक है। कीमत के आधार पर ही हम वस्त्र चुनेंगे जो हमारे बजट में सूट करेगा वही मूल्य का वस्त्र हम ले सकेंगे।

वस्त्र की कीमत प्रति मीटर के हिसाब से लगाई जाती है और ये कीमत वस्त्र की किस्म और उसकी गुणवत्ता को परखने का मौका देते हैं। अच्छी और उच्च गुणवत्ता वाले वस्त्र की कीमत ज्यादा होगी चाहे वो किसी भी प्रकार का वस्त्र हो, जैसे-सूती, रेशमी, ऊनी व मानवकृत रेशों से बना वस्त्र। उच्च गुणवत्ता वाले रेशमी वस्त्र सूती से महंगे होते हैं। और सूती वस्त्र भी अपने व्यक्तिगत गुणों के कारण सस्ते व महंगे होते हैं। ये कीमत हम वस्त्र पर लगे लेबल से देख कर पता लगा सकते हैं। वैसे दुकानदार भी कीमत बता देते हैं।

3. जो कीमत वस्त्र की बताई जा रही है उसके आधार पर वस्त्र की गुणवत्ता है या नहीं, इस बारे में भी सचेत रहने की आवश्यकता है। वस्त्र की गुणवत्ता को जांचने के लिये कुछ सामान्य बिन्दु हैं जिनके आधार पर गुणवत्ता जांची जा सकती है :

(i) आपने विभिन्न रेशों के बारे में पढ़ा है और उनकी पहचान के बारे में भी पढ़ा है। अत: उनके आधार पर ये जांच की जा सकती है कि किस रेशे से वस्त्र बना है, और जो दुकानदार बता रहा है क्या वास्तव में वही रेशा है। क्योंकि आजकल कृत्रिम और मिश्रित रेशों से बने वस्त्रों का चलन बढ़ गया है।

(ii) वस्त्र की बनावट, बुनाई और वस्त्र के सतह की सज्जा को ध्यानपूर्वक जांचना चाहिये। कई बार वस्त्र पर डिजाइन पूरा नहीं छपता, कहीं-कहीं वस्त्र की सतह छूट जाती है। इसी तरह बुनाई सही नहीं होने के कारण बीच-बीच में धागे छूट जाते हैं और सतह रफ दिखती है।

(iii) वस्त्र के रंग के पक्केपन की जांच भी कर लेनी चाहिये कि वस्त्र का रंग पक्का है या नहीं। इसको जांचने के लिये रंगीन कपड़े को किसी भी सफेद रूमाल या सफेद कपड़े पर हलका गीला करके रगड़ने पर अगर रंग निकलता है तो रंग कच्चा है अन्यथा पक्का है।

(iv) वस्त्र की मजबूती व टिकाऊपन को जांचने के लिये वस्त्र को हाथों में लेकर हलका जोर लगाकर खींचने पर यदि वस्त्र ज्यों-का-त्यों रहता है अर्थात् वस्त्र टिकाऊ और मजबूत है। इसके विपरीत अगर छीज जाता है तो बुनाई भी सही नहीं और वस्त्र मजबूत व टिकाऊ भी नहीं।

(v) वस्त्र के ऊपर की गई परिसज्जा को जांच लें कि वस्त्र की सम्पूर्ण सतह पर एक समान परिसज्जा की गई है।

(vi) वस्त्र पर लगे लेबल को अवश्य पढ़ना चाहिये इससे हमें वस्त्र की कीमत, निर्माता, उसका पता, व्यापारिक संकेत या चिह्न, देखरेख के निर्देश, उपयोग में लिये गये तन्तु, अगर दो तन्तु हैं तो उनकी मात्रा, आदि।

वस्त्रों के चयन और खरीददारी को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया है। अत: वस्त्रों के चुनाव व सही और उपयुक्त खरीद हेतु निम्न बिन्दुओं का विश्लेषण अवश्य करें :

(i) क्या वास्तव में वस्त्र या परिधान की आवश्यकता है?

(ii) क्या यह आवश्यक, उपयोगी एवं उपयुक्त है मेरे लिये?

(iii) क्या यह विभिन्न अवसरों पर काम आयेगा या केवल एक ही अवसर पर उपयोग होगा?

(iv) क्या यह मेरी आय और बजट में है?

(v) कितने समय चलेगा तथा फैशन के अनुसार है या नहीं।

(vi) क्या मेरी शारीरिक संरचना के अनुसार है?

(vii) क्या इसका रखरखाव मेरे लिये सम्भव है?

(viii) कहीं ऐसा तो नहीं कि पहले से रखे परिधान से मिलता-जुलता रंग, डिजाइन है?

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. व्यक्तित्व, उम्र, जलवायु, व्यवसाय, अवसर व आय वस्त्रों के चयन को प्रभावित करने वाले कारक हैं।
2. व्यक्ति को स्थानविशेष व जलवायु के अनुसार वस्त्र पहनने चाहिये।
3. वस्त्रों से व्यक्ति के कार्य-स्थल व व्यवसाय की पहचान होती है।
4. शरीर की संरचना, प्रचलित फैशन, वस्त्र के रंग व डिजाइन के अनुसार वस्त्रों का चयन व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हैं।
5. कार्य के अनुसार ही व्यक्ति को वस्त्र धारण करने चाहिये।
6. वस्त्र चयन प्रक्रिया में आय और आयु का विशेष ध्यान रखना चाहिये।
7. वस्त्र की मात्रा, गुणवत्ता और कीमत, वस्त्र को खरीदते समय जानना चाहिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) एक लम्बे कद वाले व्यक्ति को शोभा देते हैं :

(अ) खड़ी रेखा वाले वस्त्र

(ब) समतल रेखा वाले वस्त्र

(स) तिरछी रेखा वाले वस्त्र

(द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ii) शिशुओं के लिये वस्त्र चयन करने चाहिये :

(अ) रेशमी व गहरे रंग के

(ब) कृत्रिम रेशे के व मोटे

(स) सूती, हलके व मुलायम

(द) ऊनी व भारी

(iii) आग बुझाने वाले व्यक्ति के लिह वस्त्र होने चाहिये :

(अ) टेरीलीन (ब) ऊनी

(स) पानी अवरोधी (द) आग अवरोधी

(iv) दु:ख एवं शोक के समय वस्त्र होने चाहिये :

(अ) गहरे रंग के (ब) सफेद एवं हलके रंग के

(स) चटकीले (द) विशेष डिजाइन वाले

(v) वस्त्रों की खरीदारी करते समय जानना आवश्यक है :

(अ) वस्त्र की मात्रा (ब) गुणवत्ता

(स) कीमत (द) उपरोक्त तीनों

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) गहरे रंग की त्वचा वाले को .... के वस्त्र पहनने चाहिये।

(ii) ठण्डे प्रदेशों में रहने वालों के लिये .... वस्त्र उपयुक्त रहते हैं।

(iii) व्यक्ति के व्यवसाय की पहचान उसके .... से होती है।

(iv) फैशन का सबसे अधिक प्रभाव .... के वस्त्रों में देखने को मिलता है।

(v) परिवार की .... वस्त्रों की चयन प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

(vi) वस्त्र पर लगे .... को देख कर वस्त्र के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

3. वस्त्र की उपयुक्तता से क्या तात्पर्य है?

4. वस्त्र का चयन स्थानविशेष एवं जलवायु के अनुकूल होना चाहिये। क्यों?

5. प्रौढ़ एवं वृद्ध व्यक्ति के लिये किस प्रकार के वस्त्र उपयुक्त रहेंगे?

6. वस्त्र के चयन में आर्थिक स्थिति पर बल दिया जाता है। समझाइये।

7. फैशन का सबसे अधिक प्रभाव वस्त्र चयन पर पड़ता है। समझाइये।

8. विद्यालय जाने वाले बालक-बालिकाओं के वस्त्र चयन करते समय ध्यान रखने योग्य बिन्दुओं की विवेचना कीजिये।

9. वस्त्र की गुणवत्ता उसकी कीमत को प्रभावित करती है। स्पष्ट कीजिये।

10. वस्त्र खरीदते समय किन-किन प्रश्नों का विश्लेषण करेंगी।

11. वस्त्रों की खरीदारी करते समय किन-किन बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिये? विस्तार से समझाइये।

12. 'वस्त्रों का चुनाव' विषय पर निबन्ध लिखिये।

उत्तरमाला :

1. (i) ब (ii) स (iii) द (iv) ब (v) द

2. (i) हलके रंग (ii) गर्म व ऊनी

(iii) वस्त्रों (iv) किशोर-किशोरी

(v) आर्थिक स्थिति (vi) लेबल